

Padma Shri



SHRIGURU DR. BALAJI TAMBE (POSTHUMOUS)

Shriguru Dr. Balaji Tambe was a pioneering, world-renowned Ayurveda physician, author, spiritual guru, and public educator with exceptional contributions in Ayurveda, Yoga, Meditation, Vedic Lifestyle and Healing Music. He is the founder of Atmasantulana Village - one of India's largest Panchakarma centres, Santulan Ayurveda - known for Ayurvedic medicines in India and abroad, and Aum-Kurzentrum - Europe's first Ayurveda and Panchakarma centre.

2. Born on 28th June, 1940 in Baroda, Dr. Tambe, the son of a renowned Vedic scholar Shri Vasudeo Tambe shastri, earned a Bachelor's in Mechanical Engineering in 1960 as well as an Ayurveda Vaidya Visharad in 1964. Along with a parallel career in engineering he began his practice of Ayurveda in Pune.

3. Dr. Tambe founded the Atmasantulana Village in the rural area of Karla near Pune in 1982 and created a model Ayurvedic village that has successfully treated more than 30,000 residential patients and over 2,00,000 outpatients. Along with providing authentic and result oriented Ayurvedic treatments he also founded Santulan Ayurveda in 1985 which manufactures over 200 FDA approved medical formulations, several of which are exported to Europe. In 1995, he founded AumKurzentrum in Gleichen, Germany and subsequently a Yoga school and Ayurveda clinic in the South and West of Germany. He is a pioneer of holistic therapeutic methods and has demonstrated in thousands of patients over more than 4 decades the combined effects of Ayurveda, Yoga, Meditation and Healing Music. He has advanced Ayurvedic pharmacology by the use of modern and innovative production techniques without changing traditional, proven formulations. He was among those who restored the ancient science of Panchakarma to its authentic form. He has given society the tools to ensure the wellbeing of mother and infant, through his celebrated Ayurveda Garbhasanskar project. The book and music album have sold over 1,000,000 copies each. The project has spread to millions of families with several translations including German, and inclusion of the book in the American Library of Congress.

4. Dr. Tambe is fondly known as 'Family Doctor', in Maharashtra. He has authored a supplement in the Sakal Newspaper, for more than 18 years (over 3,400 articles), circulating 1 million copies each week. This is a unique contribution in modern Ayurveda to spread medical knowledge in simple language for the common man. The Family Doctor TV show also offered real-time, interactive health guidance to viewers. He authored more than 60 books, 50 healing music albums, countless articles and conducted more than 2000 episodes on television, in the sphere of health, spirituality and Shrimad Bhagwad Geeta. He has travelled extensively for over forty years to raise awareness about Indian knowledge systems particularly in Germany, Switzerland, Austria, as well as Africa, America, England among other countries.

5. Dr. Tambe has received over 50 awards, notably, a D.Litt from Dr. DY Patil University in 2017; the Indo-US Conclave award for Outstanding Contribution to Ayurveda in 2013, the Scroll of Honour by the Municipal Corporation of Pune in 2003; the Bharat Nirman in 1997 and the Priyadarshini Academy Award in 1996.

6. Dr. Tambe passed away on 10th August, 2021.

पद्म श्री



श्रीगुरु डॉ. बालाजी तांबे (मरणोपरांत)

श्रीगुरु डॉ. बालाजी तांबे आयुर्वेद, योग, ध्यान, वैदिक जीवन शैली और संगीत चिकित्सा में असाधारण योगदान के साथ-साथ एक अग्रणी, विश्व प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक, लेखक, आध्यात्मिक गुरु और जन शिक्षक थे। वह भारत के एक सबसे बड़े पंचकर्म केंद्र 'आत्मसंतुलन गांव', भारत और विदेश में आयुर्वेदिक नुस्खों के लिए प्रसिद्ध 'संतुलन आयुर्वेद' और यूरोप के पहले आयुर्वेद और पंचकर्म केंद्र 'ओम-कुरजेंट्रम' के संस्थापक हैं।

2. 28 जून 1940 को बड़ौदा में जन्में, प्रसिद्ध वेदशास्त्री श्री वासुदेव ताम्बेशास्त्री के सुपुत्र डॉ. तांबे ने 1960 में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की उपाधि प्राप्त की, साथ ही 1964 में आयुर्वेद वैद्यविशारद की उपाधि अर्जित की। उन्होंने पुणे में इंजीनियरिंग में समानांतर करियर के साथ-साथ आयुर्वेद की अपनी प्रैक्टिस शुरू की।

3. डॉ. तांबे ने 1982 में पुणे के पास कार्ला के ग्रामीण इलाके में आत्मसंतुलन गांव की स्थापना की और एक आदर्श आयुर्वेदिक गांव बनाया जिसमें 30,000 से अधिक आवासीय रोगियों और 2,00,000 से अधिक बाह्य रोगियों का सफलतापूर्वक इलाज किया गया है। प्रामाणिक और परिणामोन्मुख आयुर्वेदिक उपचार प्रदान करने के साथ-साथ उन्होंने 1985 में संतुलन आयुर्वेद की भी स्थापना की, जो एफडीए द्वारा अनुमोदित 200 से अधिक चिकित्सीय दवाओं का निर्माण करता है और उनमें से कई यूरोप को निर्यात की जाती हैं। 1995 में, उन्होंने जर्मनी के ग्लीचेन में 'ओम-कुरजेंट्रम' की स्थापना की और बाद में जर्मनी के दक्षिण और पश्चिम में एक योग स्कूल और आयुर्वेद क्लिनिक की स्थापना की। वह समग्र चिकित्सीय विधियों में अग्रणी हैं और उन्होंने 4 दशक से अधिक समय के दौरान, हजारों रोगियों में आयुर्वेद, योग, ध्यान और संगीत चिकित्सा के संयुक्त प्रभाव का प्रदर्शन किया है। उन्होंने पारंपरिक, सिद्ध नुस्खों को बदले बिना आधुनिक और नवीन उत्पादन तकनीकों का प्रयोग करके आयुर्वेदिक औषध विज्ञान को उन्नत किया है। वह उन लोगों में से थे जिन्होंने पंचकर्म के प्राचीन विज्ञान की इसके प्रामाणिक रूप में दोबारा वापसी की। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध आयुर्वेद गर्भ संस्कार परियोजना के माध्यम से मां और शिशु की आरोग्यता सुनिश्चित करने के लिए समाज को युक्तियां प्रदान की हैं। उनकी पुस्तक और संगीत एल्बम की प्रत्येक की 10,00,000 से अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं। इस पुस्तक का जर्मन सहित कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है और यह लाखों परिवारों तक पहुंची है। इस पुस्तक को अमेरिकी लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस में स्थान प्राप्त हुआ है।

4. डॉ. तांबे को महाराष्ट्र में 'फैमिली डॉक्टर' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने प्रत्येक सप्ताह 10 लाख प्रतियों वाले सकल समाचार पत्र के लिए 18 से अधिक वर्ष तक एक स्तंभ (3,400 से अधिक) लिखा है। उनके द्वारा जनसाधारण तक सरल भाषा में चिकित्सा ज्ञान का प्रसार करना आधुनिक आयुर्वेद में एक अनूठा योगदान है। फैमिली डॉक्टर टीवी शो ने दर्शकों को तत्काल स्वास्थ्य मार्गदर्शन भी प्रदान किया। उन्होंने स्वास्थ्य, आध्यात्मिकता और श्रीमद्भगवद्गीता पर 60 से अधिक पुस्तकें, 50 उपचार संगीत एल्बम, अनगिनत लेख लिखे और टेलीविजन पर 2000 से अधिक एपिसोड का संचालन किया। उन्होंने विशेष रूप से जर्मनी, स्विट्जरलैंड, ऑस्ट्रिया, अफ्रीका, अमेरिका, इंग्लैंड सहित अन्य देशों में भारतीय ज्ञान पद्धतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए चालीस वर्ष से अधिक समय तक बहुत यात्राएं की हैं।

5. डॉ. तांबे को 50 से अधिक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें 2017 में डॉ. डीवाई पाटिल विश्वविद्यालय से डी. लिट; 2013 में आयुर्वेद में उत्कृष्ट योगदान के लिए इंडो-यूएस कॉन्क्लेव पुरस्कार; 2003 में पुणे नगर निगम द्वारा सम्मानपत्र; 1997 में भारत निर्माण और 1996 में प्रियदर्शिनी अकादमी पुरस्कार शामिल है।

6. डॉ. तांबे का 10 अगस्त, 2021 को देहावसान हो गया।